भारतीयता के मर्म की पहचान हो

डॉ. एम. डी. थॉमस

हर देश की अपनी अहमियत होती है। यही उसका मर्म है। इस मर्म की पहचान किये बिना, चाहे बाहर से हो या भीतर से, किसी देश को समझना नामुमकिन है। भारत देश की तहज़ीब की भीतरी सच्चाइयों का निचौड़ है भारतीयता। इनकी बारीकियों से वाकिफ़ होना और इन्हें अपनाना भारत के नागरिकों के लिए अनिवार्य है। इस लेख में तीन बातें चर्चित हो रही हैं।

पहली बात है, 'पंथ-निरपेक्षता' भारतीयता की जान है। भारत देश की सारी दुनिया में एक अहम् जगह है। भौगोलिक परिस्थितियाँ, प्राकृतिक नज़ारे, जलवायु, जाति, प्रजाति, वर्ग, भाषा, विचारधारा, सँस्कृति, आदि भारतीय जीवन से जुड़ी हुई विविधताओं के तरह-तरह के पहलू हैं। 'विविधता में एकता' भारतीय जीवन का केन्द्रीय भाव है। 'वसुधैवकुटुम्बकम्', याने सारी धरती, सारा विश्व, एक परिवार है, ऐसा एहसास हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी की अहमियत है। इस नज़रिये पर अमल करने के लिए भारत के संविधान द्वारा दिया हुआ मूल मन्त्र है 'पंथ-निरपेक्षता', या 'धर्म-निरपेक्षता'। इसका मतलब यह कतई नहीं कि भारत को धार्मिक भावनाओं से अछूता रहना चाहिए। इसका सीधा अर्थ बस इतना है कि भारत देश किसी एक मजहब से चिपका हुआ नहीं है। सब धर्म-परम्पराएं भारत के लिए मूल्यवान है, प्रिय है। संविधान के सामने सब पंथ या धर्म-मार्ग बराबर का दर्जा रखते हैं। पंथ-निरपेक्षता का मतलब सिर्फ मज़हबी धाराओं से नहीं समझा जाना चाहिए। इसका आशय भारतीय समाज की समस्त हकीकतों से है। जिन सामाजिक धाराओं की शुरुआत भारत में हुई वे ही नहीं, वर्तमान में भारत में मौजूद मज़हबी, साँस्कृतिक, वैचारिक और अन्य परम्पराएं भी, भारत की अपनी हैं। उनमें एक को स्वीकारना और दूसरे को नकारना पंथ-निरपेक्षता के नज़रिये के खिलाफ है। भारत की समूची परम्पराओं के साथ बराबरी का भाव रखना भारत के संविधान का मर्म है। एक-दूसरे में फर्क करने की इज़ाजत किसी को भी नहीं है। ऐसी पंथ-निरपेक्षता भारत का पुनीत धर्म है और उस पर अमल करना भारतीयों का नागरिक फ़र्ज है।

दूसरी बात है, 'संविधान' भारत का पवित्र ग्रन्थ है। जिन दिव्य पुरुषों ने मजहबी परम्पराओं की शुरुआत की है उन्हें खुदाई अवतार या पैगम्बर मानने वाले लोग उनकी वाणी के लिखित संग्रह को पवित्र ग्रन्थ मानते हैं। समाज के क्रान्तिकारी चिन्तकों के अनोखे विचारों के संकलित रूपों को भी विश्व के महान गौरव ग्रन्थों में शुमार किया जाता है। भक्ति और आस्था को जगाने वाले धर्मग्रन्थ हों या सुचारू रूप से जीवन-यापन की प्रेरणा देने वाले गौरव ग्रन्थ हों, दोनों मानने वाले समुदाय के लिए पूज्य है। अगर इस लिहाज़ से सोचा जाए तो यह समझना सरल है कि भारत का संविधान भारतीय समाज का सामूहिक पवित्र ग्रन्थ है। सभी महान पुस्तकों में सार्वजनिक बातें निहित होने पर भी अक्सर वे सब किसी-न-किसी समुदाय विशेष की खास बपौती समझी जाती हैं। लेकिन भारत के नागरिक होने के नाते भारत का संविधान सबके लिए बराबर पूजनीय है। अपना-अपना पवित्र ग्रन्थ जितने पूज्य भाव से माना जाता है, ठीक उतना और उससे भी अधिक पुनीत भाव भारत के संविधान को दिया जाना चाहिए। हर नागरिक को चाहिए कि वह संविधान को पढ़े, समझे और उसकी मुख्य बातों को मन से अपनाये। संविधान में निहित मूल्य भारतीय समाज के राष्ट्रीय मूल्य हैं। यही हैं हर नागरिक के देशीय मूल्य भी। संविधान के मूल्य नागरिकों की दशा और दिशा को तय करते हैं। जिस प्रकार पवित्र ग्रन्थ उसे मानने वालों की पहचान बनता है, ठीक उसी प्रकार संविधान के मूल्यों पर चलने वालों को संविधान बुनियादी पहचान या अस्मिता दिलाता है। भारत के संविधान को पवित्र ग्रन्थ मानना और उसके मूल्यों पर अमल करना भारतीयों की, चाहे वह शासन वर्ग में हो या शासित वर्ग में, अहम् भूमिका है।

तीसरी बात है, 'साझा सँस्कृति भारत की असली अस्मिता है। जैसे हर शख्स में कुछ खास होता है, ठीक वैसे ही हर समुदाय की भी एक खासियत होती है। हर प्रजाति या जाति में कुछ अहम् बात होती है। हर भाषा की भी अपनी पहचान होती है। हर

विचारधारा मं कुछ नयापन है। हर मज़हबी परम्पराओं मं कुछ अनूठी बात रहती है। हर सँस्कृति मं दम है। सभी समुदायों मं अपनी-अपनी विशेषताएं होती हैं। ये सभी विविधताएं भारतीय समाज की समद्धि के भिन्न-भिन्न आयाम हैं। ये सब भारत की सांम्मलित धरोहर हैं। ये सब मिलकर भारत देश बनता है। इसलिए अलग-अलग अहमियत वाले समुदायों द्वारा आपस मं नाता जोड़ना और एकता रखना भारत देश की वजूद के लिए ज़रूरी है। एक-दूसरे को पहचानना और जानना तथा एक-दूसरे के साथ सहयोग करना देश की अखण्डता और एकजुटता के लिए अनिवाय है। बशुमार तहज़ीबों का मिला-जुला रूप है 'साझा सँस्कृति'। भारत के नागरिकों मं मजहब, क्षेत्र, जाति, सँस्कृति, समुदाय, आदि का फ़र्क किये बिना 'हम की भावना' हो, यह भारत की साझा सँस्कृति की कामयाबो का मूल मंत्र है। एसी साझा भावना लिए अपनी-अपनी ज़िन्दगी को तय करना भारतीयों का दायित्व है। भारतीयता बस इसी का नाम है। सभी भारतीयों मं इसके मर्म की पहचान हो, यह देश की एकजुटता और मजबूती के लिए बहद ज़रूरी है।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS